10

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

ससुराल की समस्याएं सुलझाने से

विभिन्न समाजों में ससुराल पक्ष को अलग तरह से देखा जा सकता है। विशेषकर अमेरिका में तो सास पर बहुत से चुटकले पाए जाते हैं। परन्तु नव विवाहित दम्पत्ति के जीवन में सास का हस्तक्षेप शायद मज़ाक की बात नहीं है। जब ससुराल वाले विवाहित बच्चे को या नई लाई बहू को बात-बात पर टोकते हैं तो विवाहित जीवन में कई समस्याएं आ जाती हैं। हालात और भी खराब हो जाते हैं जब दम्पत्ति की इस बात पर सहमति नहीं बन पाती कि इस दखलअंदाज़ी का क्या किया जाए।

ससुराल वाले नव विवाहितों के जीवन में ताक-झांक न भी करें तौ भी वे मतभेद का कारण बन सकते हैं। उदाहरण के लिए दूल्हा-दुल्हन छुट्टियों में किसके यहां जाएंगे? नव विवाहित दम्पत्ति किस परिवार की रस्मों को मानेगा? इस तरह के सवाल परेशानी का कारण बन सकते हैं।

विवाह हो जाने पर (पति या पत्नी के अलावा) आपको जो एक चीज़ मिलती है, वह है ससुराल।[1] ससुराल वाले आपके विवाहित जीवन पर एक बोझ सा बन सकते हैं, जब तक आप और आपकी घर वाली बाइबल की शिक्षा के अनुसार सही ढंग से उससे मिलना सीख नहीं जाते। आपको अपने ससुराल पक्ष के मामले में क्या करना चाहिए?

अपने ससुराल पक्ष के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाएं

सबसे पहले आपको अपने ससुराल वालों के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाना आवश्यक है। अमेरिका की संस्कृति में ससुराल वाले विशेषकर सास को बिल्कुल गलत दृष्टिकोण से देखते हैं। फिर भी यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि ससुराल में झगड़े अनिवार्य हैं। बाइबल में ससुराल वालों के साथ अच्छे सम्बन्धों के कम से कम दो उदाहरण दिए गए हैं: नओमी और उसकी बहू रूत की खूबसूरत कहानी[2] और मूसा और उसके ससुर यित्रो का विवरण।[3] अपने विवाह का आरम्भ इस निश्चय से करना कि मैं अपने पति के माता-पिता के साथ सकारात्मक सम्बन्ध रखूंगी, ससुराल की ओर झगड़े से को आरम्भ होने से पहले ही रोकने का अच्छा ढंग होगा।

आप अपने ससुराल वालों के प्रति सकारात्मक रवैया कैसे अपना सकते हैं? नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं:

(1) *समझें कि आपका पति/आपकी पत्नी अपने माता-पिता को प्रेम करता/करती है।* उन लोगों से प्रेम करना सीखें, जो उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिससे आप प्रेम करते हैं! एक अच्छा नियम जो आप दोनों को मानना चाहिए वो है कि *"अपने पति या पत्नी के परिवार की कभी भी आलोचना न करें!"* हो सकता है कि यदि आप अपने ससुराल वालों की अलोचना करें तो आपकी पत्नी या आपके पति को उसके बचाव के लिए बाध्य होना पड़े।

(2) *याद रखें कि आपके पति/पत्नी के माता-पिता आपके भी माता-पिता हैं।* आप अपने

माता-पिता के साथ अपने पति/पत्नी से कैसा व्यवहार चाहेंगे? आपका उत्तर जो भी हो लेकिन सुनहरा नियम[4] तो आपको यही सलाह देगा कि अपने साथी के माता-पिता के साथ आपका व्यवहार। ऐसा ही होना चाहिए। आपका व्यवहार आपके ससुराल वालों के प्रति अच्छा होना चाहिए। दूसरे शब्दों में क्योंकि आप अपने साथी से प्रेम करते हैं और क्योंकि आप अपने माता-पिता से प्रेम करते हैं।

(3) *समझें कि आपको अपने पति/पत्नी में जो बातें अच्छी लगती हैं, वे ससुराल वालों की ही देन हैं।*[5] आपके प्रिय को सुन्दरता, शारीरिक गुण, और मानसिक योग्यता सब उन्हीं से ही मिली हैं। इसके साथ ही किस प्रकार से उन्होंने आपके पति या पत्नी का पालण-पोषण किया है जिस से वह ऐसा योग्य व्यक्ति बना, जिससे आपने विवाह किया। आमतौर पर आपको अपने ससुराल वालों का धन्यवादी होना चाहिए जो उन्होंने अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा देकर ऐसा योग्य व्यक्ति बनाया जिसको आपने पसन्द किया और प्रेम किया!

(4) *समझने की कोशिश करें कि क्यों ससुराल वाले विशेषकर सास ऐसा व्यवहार करती हैं।* अपने विवाह को अपनी सास की नज़र से देखें। माता आमतौर पर पिता की अपेक्षा बच्चों के अधिक निकट होती है। जब उसके एक बच्चे का विवाह होता है, तो मां भावुक हो जाती है। उदाहरण के लिए जब कोई युवक विवाह करता है तो मां को इस बात की चिन्ता हो जाती है कि उसकी पत्नी उसका ध्यान उस प्रकार नहीं रख पाएगी, जैसे वह स्वयं रखती थी। उसे इस बात का भी पता नहीं होता कि अब जब विवाह के बाद उसके जवान बच्चे ने घर छोड़ दिया है तो उसके जीवन में अब उसकी क्या भूमिका होगी। उसे अब इस बात का डर सताने लगता है कि अब उसकी बहू उसके बेटे के जीवन में उसकी जगह ले लेगी यानी अब वो अपनी मां से प्रेम नहीं करेगा। उसे इस बात की चिन्ता रहती है कि उसके विवाह का अर्थ है कि वह परिवार को छोड़ रहा है। अगर उसकी बेटी की शादी होने जा रही है तो वह (और उसका पति) इस बात की चिन्ता में रहता है कि जिससे वह शादी करने जा रहा है क्या वह उसके योग्य है भी कि नहीं।

नव विवाहित दम्पत्ति के लिए सब से बड़ी चुनौती है कि उन्हें इस डर को खत्म करना होगा-उदाहरण के लिए उन्हें दोनों ओर के माता-पिता को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे उन से प्रेम करते हैं और उन्हें छोड़ेंगे नहीं। उन्हें अपने माता-पिता के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए और उन्हें समझने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए-क्योंकि आने वाले बीस वर्षों में या उससे आगे जब उसके अपने बच्चे विवाह करेंगे तो उनके मनों में भी यही भावना आएगी।

(5) *याद रखें कि विवाह के बाद आपको केवल पति या पत्नी ही नहीं मिलती बल्कि एक -एक पूरा परिवार*[6] *मिलता है।* आप उस परिवार का हिस्सा बनते हैं, और शायद आप अगले चालीस पचास वर्षों तक उसका हिस्सा बने रह सकते हैं।[7] उस समाज में परिवार के साथ आपका सम्बन्ध कैसा होगा? व्यावहारिक दृष्टिकोण से सभी सम्बन्धित लोगों को चाहिए कि अपने ससुराल पक्ष को साथ लेकर चलें। झगड़े और क्लेश में बिताए गए चालीस वर्षों के बजाय प्रेम और शान्ति में बिताए चालीस वर्ष अधिक सुखद होंगे।

अपने माता-पिता से अलग अपना स्वयं का घर बसाएं

विवाह होने पर आप यह संकेत देते हैं कि अब आप बड़े हो गए हैं और आप अपने

माता-पिता के बिना अपना दैनिक जीवन चलाने के लिए तैयार हैं। यीशु ने कहा कि विवाह के बाद पुरुष ''अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ मिला'' रहे (मत्ती 19:5)। ''माता-पिता से अलग'' होने का अर्थ है कि आपने उनसे अपनी स्वतंत्रता का ऐलान कर दिया है और आप और आपकी पत्नी, उन घरों से अलग जिसमें आप दोनों पले-बढ़े, आपका अपना घर बसाएंगे।

स्वतन्त्रता का अर्थ जो है

संसार के बहुत से भागों में आज दम्पत्ति के रूप में अपने आप को अलग स्थापित करने का अर्थ है कि आप अपने माता-पिता से अलग रहेंगे। चाहे, नवविवाहित दम्पत्ति के रूप में आप और आपका साथी किसी एक के माता-पिता के साथ रहने का निर्णय करते हैं, तब भी आपको अपने आपको स्वतन्त्र ही मानना चाहिए-एक आत्म-निर्भर और दोनों के बचपन के परिवारों से स्वतन्त्र परिवार।

आपके नए परिवार की आत्मनिर्भरता में निम्न बातें होनी चाहिए।

(1) *आर्थिक स्तवन्त्रता।*[8] आप अपनी आर्थिक भलाई के स्वयं जिम्मेदार होंगे।

(2) *इच्छा की स्वतन्त्रता।* आपको अपने निर्णय स्वयं लेंगे, अपने माता-पिता की इच्छा की परवाह किए बिना।

(3) *भावुक स्वतन्त्रता।* आपको भावनात्मक समर्थन पाने के लिए अपने माता-पिता के बजाय एक-दूसरे पर निर्भर होना चाहिए।

(4) *भौतिक स्वतन्त्रता।* परिस्थितियों के अनुकूल यह आपकी इच्छा है कि आप अपने माता-पिता के साथ समय बिताएं या न बिताएं।

स्वतन्त्रता आपको जो करने से रोकेगी

जब आपका विवाह हो और आप सचमुच अपने माता-पिता को छोड़ दें तो कुछ ऐसी बातें होंगी, जो आप नहीं करेंगे। उदाहरण के लिए युवा पत्नी के रूप में जब भी आपके और आपके पति में कोई तकरार होगी, तो आप हर बार रोती हुए अपनी मां के पास नहीं जाएंगी, और आप अपने पति की तुलना अपने पिता से भी नहीं करेंगी। एक पति होने के नाते आप अपनी मां को कभी भी यह अनुमति नहीं देंगे कि वह आपको या आपकी पत्नी को नीचा दिखाए। इससे भी बढ़कर आप अपनी पत्नी की अलोचना इस बात के लिए नहीं करेंगे कि वह अपनी मां की तरह स्वादिष्ट खाना नहीं बनाती, या आपकी मां की तरह घर को साफ़-सुथरा नहीं रखती। आपकी मां की खााना पकाने और सफाई की कला उस बीते समय की बात है, जो आपने पीछे छोड़ दिया है। अब आपका यह दायित्व बनता है कि आप अपनी पत्नी को प्रोत्साहित करें-अपनी मां की नकल बनने के लिए नहीं, बल्कि एक अच्छी पत्नी बनने के लिए, जो वह बन सकती है जो कछ भी वह करे उसमें खुश रहें, चाहे वह उसे आपकी मां की तरह करे या न करे।

स्वतन्त्रता से जो मिलता है

यह कथन कि आपने और आपकी पत्नी ने एक नया अलग और आत्मनिर्भर घर बनाया है

जिसका अर्थ होगा कि एक दम्पत्ति होने के नाते यह आप की इच्छा है कि आप किस परिवार की परम्पराओं को मानेंगे। आप कुछ अपने बचपन के परिवारों से अलग ले सकते हैं या आप अपनी स्वयं की नई परम्पराएं बना सकते हैं। अन्त में आपके परिवार के रीति रिवाज़ आप दोनों के बचपन के परिवारों और स्वयं नए और अलग अपने-अपने द्वारा बनाए गए रीति-रिवाज़ों का मिश्रण होगा।

दोनों ओर के माता-पिता से अधिक अपने पति या पत्नी को महत्व दें

विवाह हो जाने पर, आप और आपका पति या पत्नी अपने माता-पिता से तो प्रेम करते रहेंगे ही, दोनों को अपने पति या पत्नी के माता-पिता से भी प्रेम करना आवश्यक है, पर दोनों को अपने माता-पिता से अधिक एक-दूसरे से प्रेम करना आवश्यक है। अपने जीवन में लोगों से प्रेम करते रहना बुरी बात नहीं है।[9] आप अपने जीवन में कई लोगों से प्रेम कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी दूसरे को उसी तरह से उतना ही प्रेम करना चाहिए जितना आप अपने पति या पत्नी से करते हैं।

अगर आप अपने विवाह के साथी से सबसे अधिक प्रेम करते हैं, अपने माता-पिता से भी अधिक, तो जब आपके बड़े परिवार में कोई झगड़ा होने पर आपको अपनी पत्नी का ही पक्ष लेना आवश्यक है। अगर आपके माता-पिता आपके पति या पत्नी की आलाचेना करते हैं तो आप उस अलोचना में भागीदार न बनें, बल्कि आप उसके पक्ष में खड़े हों। जब आप के माता-पिता आपको कुछ और करने को कहेंगे और पत्नी कुछ और तो आप वही करेंगे जो आपकी पत्नी कहेगी। यदि सामान्य परिस्थिति में[10] आपसे पूछा जाए कि आप माता-पिता के साथ या पत्नी में से किसके साथ समय बिताना पसन्द करेंगे तो आप पत्नी के साथ ही समय बिताना चुनेंगे।

दोनों ओर के माता-पिता के साथ ठीक व्यवहार करें

आपकी पहली ज़िम्मेदारी है कि सब के साथ अच्छा व्यवहार करें (अपने सास-ससुर के साथ भी) जैसा एक मसीही का होना चाहिए। इस तरह आप कोशिश करेंगे कि आप दोनों ओर के माता-पिता से प्रेम करें,[11] दया की भावना रखें, उनकी मदद करें और यह सब बिना किसी स्वार्थ के करें। यदि आपको यह विश्वास है कि आपके ससुराल वाले आपको पसन्द नहीं करते और आपके साथ बुरा व्यवहार करते हैं-चाहे आप उन्हें अपने दुश्मन ही समझें फिर भी आप मसीह के नमूनों और निर्देशों पर चलेंगे।

(1) उनसे प्रेम करें, क्योंकि यीशु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो" (मत्ती 5:44)।

(2) उन्हें क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने मसीह में आपको क्षमा किया (इफिसियों 5:32)।

(3) उनके साथ भलाई ही करें, बुराई के बदले बुराई नहीं, बल्कि बुराई के लिए भलाई (रोमियों 12:20, 21)।

माता-पिता (दोनों ओर के) के प्रति व्यवहार का हिस्सा यह भी देखना है कि उनके लिए क्या भला है।[12] विशेषकर उनकी आवश्यकताओं को समझना और उन्हें पूरा करने की कोशिश करना। उदाहरण के लिए एक पति होने के नाते आप यह सोच सकते हैं कि आपकी पत्नी अब केवल आपकी है और आपको उसे किसी के साथ बांटने की आवश्यकता नहीं है लेकिन प्रेम

आपको यह सोचने पर विवश करेगा कि उसके माता-पिता को भी कभी-कभी अपनी बेटी से मिलने की आवश्यकता है। इस तरह आप खुशी-खुशी समय-समय पर अपनी पत्नी को उसके साथ बांटेंगे।

आपको दोनों तरफ़ से माता-पिता से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। जिसका अर्थ है कि अगर हो सके तो आप अपना समय और ध्यान अपने माता-पिता और अपने सास-ससुर के बीच एक समान बांटेंगे। जब आपको और आपकी पत्नी को यह समझने में मुश्किल आए कि सही क्या है-किससे कब मिलना चाहिए तब आपको ''झगड़ों को सुलझाने'' पर पुस्तक से कुछ सलाह लेनी चाहिए।

वयस्क बच्चों की ज़िम्मेदारी है कि अपने माता-पिता का ध्यान रखें

बाइबल सिखाती है कि जब माता-पिता बूढ़े हो जाएं या अपना ध्यान रखने में असमर्थ हों, तब बच्चों का दायित्व है कि वे उनका ध्यान रखें। यीशु ने मत्ती 15:1-9 में ''माता-पिता का आदर करने'' और उन्हें आर्थिक सहायता देने के लिए कहा है।[13] ऐसा समय आ सकता है कि जब आपको और आपकी पत्नी को दोनों ओर के माता-पिता की देखभाल का प्रबन्ध करना पड़े।

सारांश

एच. नॉरमन राइट द्वारा सास-ससुर के प्रति कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं। उन दम्पत्तियों को जो विवाह करने की योजना बना रहे हैं, उसने ''ससुराल पक्ष के साथ सम्बन्ध सुधारने के कुछ विशेष पग'' निम्न रूप में दिए हैं।

- अपने ससुराल के सम्बन्धों में सकारात्मक अर्थात आशावादी विचार रखें।
- अपने भावी पति या पत्नी के परिवार के साथ अपने सम्बन्ध के महत्व को पहले ही समझ लें।
- यह तय कर लें कि आप अपनी पारिवारिक रस्मों में से कौन सी अपने परिवार में अपनाएंगे और कौन से नए रीति-रिवाज़ आप अपनाने की कोशिश करेंगे।
- अपने होने वाले पति या पत्नी के माता-पिता और अपने माता-पिता की ज़रूरतों का पहले ही ख्याल रखें।
- अपने होने वाले सास-ससुर को वही मान-सम्मान दें, जो आप जो आप अपने दोस्तों को देते हैं।
- जब आपके भावी ससुराल वाले आपको कोई सुझाव देते हैं, तो आप उसे वैसे ही माने जैसे किसी मित्र की सलाह हो।
- अपने होने वाले सास-ससुर में खूबियां ढूंढ़ें।
- जब आप अपने होने वाले सास-ससुर से मिलने जाएं (और जब वे मिलने आएं) तो अपना मिलने का समय कम ही रखें।
- जब आप विवाह करें तो अपने सास-ससुर को उनके जीवन में आए बदलाव के लिए समय दें।
- अगर आप अपने होने वाले सास-ससुर को कुछ सलाह देना चाहते हैं तो आपके लिए

अच्छा होगा कि आप सलाह तब तक न दें, जब तक वे मांगें ना।

- अपने भावी पति या पत्नी की कमियां और आपसी असहमतियों को अपने परिवार को न बताएं।
- बात-बात पर अपने मंगेतर के सामने अपने परिवार की प्रशंसा न करें।[14]

विवाह के बाद अपने सास-ससुर से मिलने पर आप यह जरूर सोचें कि एक दिन आप और आपका पति या पत्नी भी किसी के सास-ससुर बनेंगे। अपने सास-ससुर से वैसा ही व्यवहार करें, जैसा आप चाहते हैं कि आपके साथ हो और जैसा सम्बन्ध आपका अपने सास-ससुर के साथ होगा वैसा ही आपके बच्चों के पति-पत्नी का भी आपके साथ होगा।

टिप्पणियां

[1]ससुराल से बचने का एकमात्र ढंग किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना है जिसका कोई रिश्तेदार न हो, और ऐसा आप कभी करना नहीं चाहेंगे। [2]देखें रूत की पुस्तक। [3]देखें निर्गमन 2:15-22; 4:18; 18:1-27. ऐसा लगता है कि यित्रों मूसा को गोद लिए पुत्र की तरह मानता था (गिनती 10:29-32 भी देखें)। ससुर और उसके दामाद के बीच तनाव के एक उदाहरण के लिए याकूब उत्पत्ति 29-31 में लाबान और याकूब की कहानी देखें। [4]''सुनहरी नियम'' के रूप में प्रसिद्ध मत्ती 7:12 को कई बार ''दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हों कि वह तुम से करें'' बताया जाता है। [5]इस नियम के अपवाद: अपने माता-पिता के बुरे नमूने को देखकर बच्चे अपने माता-पिता के तरीके ठुकरा सकते हैं और अपने माता-पिता से अधिक भक्तिपूर्ण बन सकते हैं (देखें यहेजकेल 18:5-18)। [6]अमेरिका में कालांतर में यह तथ्य अधिक पाया जाता था, पर आमतौर पर व्यक्तिवाद और ''छोटा परिवार'' जिसमें माता-पिता और बच्चे होते हैं और दादा-दादी या नाना-नानी नहीं होते, पर जोर दिया जाने के कारण इसे नज़रअंदाज किया जाता है। अन्य समाजों में आज भी इस तथ्य पर अधिक ज़ोर दिया जाता है कि नवविवाहित दम्पत्ति एक-दूसरे के परिवार का भाग बन जाते हैं। अपने ससुराल के परिवार का भाग बनने की अवधारणा रूत द्वारा जताई गई थी जब उसने अपनी नाओमी से कहा, ''जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी; जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी'' (रूत 1:16ख, 17क)। [7]एक अर्थ में आपके साथी का पिता और माता, अल्हड़ बहन और गैर जिम्मेदार भाई को साथ लेकर चलना आपका पिता, माता, बहन और भाई बन जाता है। उन पर अत्यधिक आलोचनात्मक होने से पहले आपको शायद यह विचार कर लेना चाहिए कि आपका परिवार दूसरों को कैसे लगता है! [8]यह बात माता-पिता को बच्चों को बढ़ने से रोकने में रोकती नहीं है। परन्तु माता-पिता जो सहायता करते हैं और बच्चे जिनकी सहायता की जाती है कि ऐसी सहायता युवा दम्पत्ति को सदा के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर न बना दें। [9]यीशु ने संकेत दिया कि उसके चलों में प्रेम का ऐसा तंत्र होना चाहिए जब उसने कहा, ''जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:37क)। पतरस से किया गया यीशु का प्रश्न भी देखें: ''क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम रखता है?'' (यूहन्ना 21:15क)। प्रचारक बार-बार कहते हैं कि हमें पहले यीशु से, उसके बाद दूसरों से और फिर अपने आप से प्रेम करना चाहिए। [10]आपातकाल के समयों में कई बार अपवाद होने आवश्यक है उदाहरण के लिए यदि आपको किसी बीमार मरीज की देखभाल करने की तुरंत आवश्यकता हो ।

[11]मसीही व्यक्ति के दूसरों के प्रति काम करने के ढंग के संकेत के रूप में देखें 1 कुरिन्थियों 13:4-7. [12]''वह करना जो उनके लिए सबसे अच्छा हो'' मसीही प्रेम की परिभाषा से मेल खाता है। [13]1 तीमुथियुस 5:4, 8, 16 भी देखें। [14]एच. नारमन राइट, सो यू'आर गेटिंग मैरिड (वैन्चुरा, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, 1985), 236-39.